National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 14-08-2024, Accepted: 13-09-2024, Published: 28-09-2024
Volume 9, Issue 3, 2024, Page No. 57-60

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन

डॉ० विभा सिंह[1], विशाल सिंह यादव[2]
[1] एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शिक्षा विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
संज्ञानात्मक शैली विद्यार्थियों में निहित एक मनोवैज्ञानिक गुण होता है जो यह समझने का प्रयास करता है कि विद्यार्थी किस प्रकार से जानकारी ग्रहण करते हैं उसे संसाधित करते हैं और सीखने की प्रक्रिया को प्रबंधित करते हैं। संज्ञानात्मक शैली व्यक्तियों की मानसिक प्रक्रिया से संबंधित होती है जिसमें जानकारी को सोचने, समझने और हल करने के विभिन्न तरीके शामिल होते हैं। शोधकर्ता द्वारा किया गया यह अध्ययन स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली को समझने और उनकी सीखने की क्षमताओं पर इसके प्रभाव को मापने का प्रयास करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में कौन–कौन सी संज्ञानात्मक शैलियाँ पाई जाती हैं और ये शैलियाँ किस प्रकार से उनकी शैक्षिक प्रदर्शन, समस्या समाधान क्षमता और सीखने की रणनीतियों को प्रभावित करती हैं।

मूल शब्दः स्नातक स्तर, विद्यार्थी, संज्ञानात्मक शैली, मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात इत्यादि

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संज्ञानात्मक शैली व्यक्ति के सोचने, जानकारी संसाधित करने और समस्याओं को हल करने के तरीकों को प्रतिबिंबित करती है। प्रत्येक विद्यार्थी की संज्ञानात्मक शैली भिन्न–भिन्न हो सकती है जो उनके सीखने के अनुभवों, रुचियों और मानसिक क्षमताओं पर प्रभाव डालती है। स्नातक स्तर पर जब विद्यार्थियों का मानसिक विकास और शैक्षणिक अनुभव परिपक्व होते हैं तब उनकी संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन करना न केवल उनकी शिक्षा में सुधार के लिए आवश्यक होता है बल्कि यह भी समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि वे किस प्रकार से सूचनाओं को ग्रहण करते हैं और किस प्रकार से उनका विश्लेषण करते हैं।

इस शोध पत्र का उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैलियों का अध्ययन कर यह जानना है कि किस प्रकार उनकी सोचने और सीखने की प्रवृत्तियाँ उनके शैक्षिक प्रदर्शन और जीवन के अन्य पहलुओं पर प्रभाव डालती हैं। इसके अतिरिक्त यह लेख शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों को इस संदर्भ में मार्गदर्शन प्रदान करेगा कि वे विद्यार्थियों की विविध शैलियों को समझकर अधिक प्रभावी शिक्षण विधियाँ कैसे अपना सकते हैं। इस अध्ययन में विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली की पहचान के लिए एक मानकीकृत परीक्षण का उपयोग किया गया है । इसके साथ ही विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन और उनके सीखने की शैली का गहन विश्लेषण किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैलियाँ विविध होती है। कुछ विद्यार्थी विश्लेषणात्मक और तार्किक दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं जबकि कुछ विद्यार्थी सहज और रचनात्मक तरीके से सीखना पसंद करते हैं।

परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि विभिन्न संज्ञानात्मक शैलियाँ विद्यार्थियों की शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। शिक्षक अगर विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली के अनुसार शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करें तो शैक्षणिक परिणाम बेहतर हो सकते हैं। इस अध्ययन के परिणामों को ध्यान में रखते हुए यह सुझाव दिया गया है कि शिक्षकों को विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैलियों के आधार पर पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों को अनुकूलित करना चाहिए ताकि हर प्रकार के विद्यार्थी को अधिकतम लाभ मिल सके। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष संज्ञानात्मक शैलियों के महत्व और स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक क्षमता को समझने में सहायक है।

शोध के अध्ययन की आवश्यकताः स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन शैक्षिक प्रणाली में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन विद्यार्थियों के सोचने, सीखने और जानकारी को आत्मसात करने के तरीके को समझने में मदद करता है जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और व्यक्तिगत विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। संज्ञानात्मक शैली को समझकर शिक्षकों को विद्यार्थियों के व्यक्तिगत शिक्षण तरीके को पहचानने में मदद मिलती है। प्रत्येक विद्यार्थी अलग–अलग तरीके से सोचता और सीखता है इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली को लचीला बनाया जाए ताकि विभिन्न संज्ञानात्मक शैलियों को ध्यान में रखकर शिक्षा दी जा सके। संज्ञानात्मक शैली के अध्ययन से शिक्षकों को यह जानकारी मिलती है कि कौन–से छात्र दृश्य शिक्षा, श्रव्य शिक्षा या व्यावहारिक शिक्षा को अधिक प्रभावी रूप से ग्रहण करते हैं। इससे वे अपने शिक्षण विधियों में बदलाव कर सकते हैं ताकि सभी विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से पढ़ाया जा सके। कुछ विद्यार्थी जानकारी को तेजी से ग्रहण करते हैं जबकि अन्य को इसे समझने में अधिक समय लगता है। संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि विद्यार्थी कौन–सी बाधाओं का सामना कर रहे हैं और उन्हें दूर करने के लिए कौन–से उपाय किए जा सकते हैं। संज्ञानात्मक शैली विद्यार्थियों की समस्या–समाधान और नवाचार की क्षमताओं पर भी प्रभाव डालती है। जब शिक्षकों को यह जानकारी होती है कि विद्यार्थी कैसे समस्याओं का समाधान करते हैं तो वे उन्हें नए दृष्टिकोण और तकनीकों का उपयोग करने में मदद कर सकते हैं जिससे उनकी रचनात्मकता और सोचने की क्षमता का विकास होता है।

संज्ञानात्मक शैली के अध्ययन से यह समझने में मदद मिलती है कि विद्यार्थियों के कौन–से गुण और क्षमताएं उन्हें विभिन्न करियर विकल्पों में सफल बना सकती हैं। इससे करियर काउंसलिंग अधिक सटीक और प्रभावी हो जाती है। संज्ञानात्मक शैली न केवल सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है बल्कि विद्यार्थियों के भावनात्मक और सामाजिक विकास पर भी प्रभाव डालती है। जब विद्यार्थी अपनी संज्ञानात्मक शैली को समझते हैं तो वे अपनी ताकतों और कमजोरियों को पहचानते हैं जिससे उनका आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान बढ़ता है।

आजकल तकनीक आधारित शिक्षण सामग्री का उपयोग बढ़ रहा है। संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन शिक्षकों और सामग्री निर्माताओं को इस बात की जानकारी देता है कि किस प्रकार की डिजिटल सामग्री (वीडियो, एनिमेशन, इंटरेक्टिव सत्र आदि) विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयुक्त होगी जिससे उनकी समझ और सीखने की क्षमता में सुधार हो सके। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन शैक्षणिक प्रणाली को अधिक लचीला, प्रभावी और व्यक्तिगत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विद्यार्थियों की शिक्षा को उनके व्यक्तिगत गुणों और क्षमताओं के अनुसार ढालने में मदद करता है जिससे उनके शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास को गति मिलती है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकनः सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है, यहाँ साहित्य समीक्षा का अर्थ दिया गया।

सम्बंधित साहित्य

जेना (2013) ने ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उनके लिंग और धारा के संबंध में संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन किया इस अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि व्यवस्थित संज्ञानात्मक शैली के साथ–साथ सहज ज्ञान युक्त शैली पर पुरुष और महिला स्नातक छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

रेड्डी एम. (2013) में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की संज्ञानात्मक शैली का एक अध्ययन किया इस अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में लिंग भिन्नता के कारण संज्ञानात्मक शैली में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया जबकि शिक्षकों की संज्ञानात्मक शैली का उम्र में भिन्नता के साथ–साथ स्थानीय भिन्नता के कारण महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

जमानी एट अल (2014) ने मलेशिया में स्वतंत्रता से पहले और बाद की पीढ़ी में लचीलापन और संज्ञानात्मक शैली के संबंध में अध्ययन किया इस अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ की स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ियों के बीच संज्ञानात्मक शैली में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया लेकिन लचीलापन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

जनतान (2014) ने प्राथमिक विद्यालय में गणितीय उपलब्धि के साथ छात्रों की संज्ञानात्मक शैली (क्षेत्र निर्भर और क्षेत्र स्वतंत्र संज्ञानात्मक शैली) के बीच संबंध का अध्ययन किया अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि विद्यालयों में लड़कों और लड़कियों के बीच संज्ञानात्मक शैलियों में महत्वपूर्ण अंतर था तथा छात्रों की संज्ञानात्मक शैलियों और उनकी गणितीय उपलब्धि के बीच कम सकारात्मक संबंध था।

कुमार, डॉ0 चमन व राय, सुशील कुमार (2019) ने 'स्व–वित्तपोषित एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों (छात्र/छात्राओं) के संज्ञानात्मक विकास स्तर का तुलनात्मक अध्ययन' किया। अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे– मऊ जनपद के कुल 16 माध्यमिक विद्यालयों (8 सहायता प्राप्त तथा 8 स्व–वित्तपोषित) का चयन किया। प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छिक विधि द्वारा कुल 484 छात्रों का चुनाव किया गया। अध्ययन में सर्वेक्षण अनुसंधान प्रविधि का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान,मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का उपयोग किया गया। संज्ञानात्मक विकास स्तर को जानने हेतु ए0ई0 लासन एव ं डॉ0 एस0एन0 त्रिपाठी द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग हुआ है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष निम्न थे– मऊ जनपद में हाईस्कूल के अधिकांश छात्र औपचारिक चिन्तन प्रक्रिया के उच्चतम स्तर पर नहीं पहुँच सके। संज्ञानात्मक विकास की दृष्टि से सहायता प्राप्त विद्यालयों के सापेक्ष स्व–वित्त पोषित विद्यालयों के विद्यार्थी सार्थक रूप से बेहतर है। दोनों कोटि के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के बीच संज्ञानात्मक विकास की दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं है। वित्त पोषित विद्यालयों की छात्राओं को सहायता प्राप्त विद्यालयों की छात्राओं के सापेक्ष संज्ञानात्मक विकास की सार्थक रूप में उच्चता प्राप्त है। वित्त पोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का संज्ञानात्मक विकास एक समान हुआ। स्व–वित्त पोषित विद्यालयों में पठनशील छात्रों को छात्राओं के सापेक्ष सार्थक रूप से संज्ञानात्मक विकास की उच्चता प्राप्त है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध निम्न उद्देश्य के अनुसार सम्पादित किया गया है –

स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान व गणित के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

शोध अध्ययन में निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पना बनाई गई हैं–

स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान व गणित के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

शोध विधिः प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

जनसंख्याः जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाईयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है। शोधकर्ता ने जौनपुर जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत 400 गणित तथा 400 जीव विज्ञान विषय के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना है।

न्यादर्शनः जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्शन कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्यता न्यादर्शन के आधार पर आकड़ों को लिया गया है।

शोध उपकरणः प्रस्तुत शोध में डॉ० प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत संज्ञानात्मक शैली अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

शोध से प्राप्त परिणामों का सारणीबद्ध व उनकी व्याख्या अग्रवत है–

परिकल्पनाः स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान व गणित के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिकाः स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान व गणित के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का विवरण

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	'टी' मान	टिप्पणी	
						.01 स्तर	.05 स्तर
जीव विज्ञान	400	147.77	7.55	798	0.089	कोई सार्थक अंतर नहीं है।	कोई सार्थक अंतर नहीं है।
गणित	400	147.82	7.49				

उपर्युक्त तालिका में स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान व गणित के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह स्नातक 798 स्तर के जीव विज्ञान के विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 147.77 तथा मानक विचलन 7.55 है, जबकि दूसरा समूह स्नातक स्तर के गणित के विद्यार्थियों का है जिसका मध्यमान 147.82 तथा मानक विचलन 7.49 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 0. 089 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान व गणित के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। इस प्रकार शोधकर्ता की उपर्युक्त परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

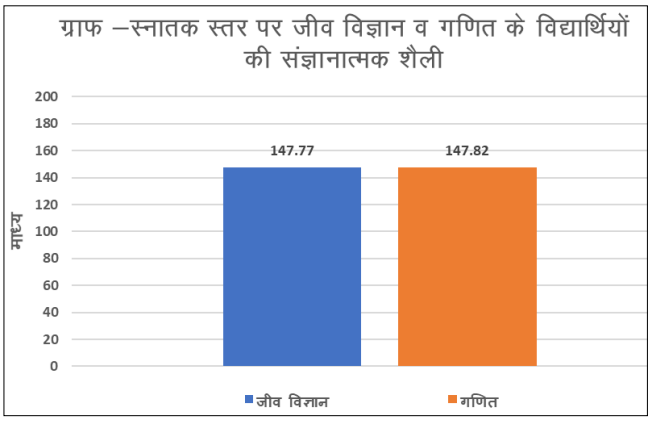

निष्कर्ष

शोध की इस परिकल्पना के अंतर्गत स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान व गणित के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली में सार्थक अंतर ज्ञात करने का प्रयास किया गया जिसमें यह देखा गया कि दोनों समूहों की संज्ञानात्मक शैली समान होती है इसका कारण दोनों प्रकार के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता व विषय के प्रति अच्छी अभिरुचि का होना है इसलिए निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि स्नातक स्तर पर जीव विज्ञान व गणित के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। दोनों विषयों के विद्यार्थियों के सोचने, समझने और जानकारी को ग्रहण करने के तरीके में कोई महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं पाई गई। यह निष्कर्ष संज्ञानात्मक शैली के अध्ययन पर आधारित है जिसमें यह देखा गया कि विद्यार्थी किस प्रकार से नई जानकारी को ग्रहण करते हैं, समस्याओं को हल करते हैं और अपनी सोच को कैसे संरचित करते हैं।दोनों ही विषयों के विद्यार्थी तर्कसंगतता, विश्लेषणात्मक सोच और समस्या समाधान के लिए एक समान संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का उपयोग करते हैं हालांकि उनके अध्ययन के क्षेत्र अलग हो सकते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि चाहे विद्यार्थी जीव विज्ञान का अध्ययन कर रहे हों या गणित का उनकी मानसिक प्रक्रियाओं में कोई खास विभाजन नहीं होता है।

शोध की उपयोगिताः स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन शैक्षिक दृष्टिकोण से कई महत्वपूर्ण लाभ प्रदान कर सकता है। संज्ञानात्मक शैली से तात्पर्य है कि व्यक्ति कैसे जानकारी ग्रहण करता है, उसका विश्लेषण करता है और समाधान खोजता है। यह प्रत्येक व्यक्ति के सोचने और सीखने के तरीके में भिन्नता को दर्शाता है।

इस अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता निम्नलिखित है–

1. संज्ञानात्मक शैली को जानकर शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत सीखने की शैली को समझ सकते हैं और उनके अनुसार अधिगम रणनीतियों को विकसित कर सकते हैं। इससे शिक्षा व्यक्तिगत हो सकती है और छात्रों की सीखने की क्षमता बढ़ाई जा सकती है।
2. संज्ञानात्मक शैली के अध्ययन से यह पता चलता है कि कौन से विद्यार्थी दृश्य, श्रवण या व्यावहारिक शिक्षण विधियों से बेहतर सीखते हैं। इससे शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण तकनीकों का चयन करने में मदद मिलती है जो सभी प्रकार के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त हो।
3. विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन करने से पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों को इस प्रकार अनुकूलित किया जा सकता है कि वह सभी प्रकार के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। इससे छात्रों का पाठ्यक्रम में जुड़ाव और रुचि बढ़ती है।
4. विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली को ध्यान में रखकर उन्हें समस्याओं को हल करने के अलग–अलग तरीके सिखाए जा सकते हैं। इससे उनकी समस्या–समाधान क्षमता में सुधार होता है, जिससे वे जीवन में विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार होते हैं।
5. करियर और पढ़ाई के विकल्पों को लेकर उलझन में होते हैं। संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन उनके शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन में सहायक हो सकता है। इससे विद्यार्थियों को उनकी क्षमता और रुचि के अनुसार सही करियर और अध्ययन के विकल्प चुनने में मदद मिलती है।
6. विभिन्न विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैलियों का अध्ययन और मान्यता देकर एक से अधिक समावेशी और समान शैक्षिक वातावरण तैयार किया जा सकता है। इससे हर विद्यार्थी को सीखने और विकास करने के समान अवसर मिलते हैं।

इस प्रकार स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का अध्ययन शिक्षकों और संस्थानों को छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को समझने, उनके लिए उपयुक्त अधिगम वातावरण तैयार करने और उनकी शैक्षिक और व्यक्तिगत सफलता में सुधार करने में अत्यधिक सहायक हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, आर0ए0 (2008): भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. भटनागर, डॉ0 ए0बी0 (2008): अधिगम एवं शिक्षण, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. अग्रवाल, डॉ0 नीता (2008): बाल विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. नागर, डॉ0 बीनू एवं राजपूत, डॉ0 आशा (2010): बाल विकास आगरा पब्लिकेशन, आगरा।

5. जायसवाल, सीताराम (2012): व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. श्रीवास्तव, डी0एन0 एवं पाठक, के0पी0 (2012): बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान, आगरा पब्लिकेशन, आगरा।
7. श्रीवास्तव, महेन्द्र नाथ एवं कुमार सतीश (2014): बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
8. श्रीवास्तव, डॉ0 डी0एन0 (2020): अनुसंधान विधियां, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
9. गुप्ता, प्रो0 एस0पी0 एवं गुप्ता, डॉ0 अलका, (2013): सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
10. राय, पारस नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
11. सिंह, अरूण कुमार (2017): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।
12. कुमार, आर. (2016): संज्ञानात्मक शैलीरू शिक्षा में प्रभाव और महत्त्व, भारतीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
13. सिंह, ए. (2018): संज्ञानात्मक शैली और इसके शैक्षिक अनुप्रयोग, प्रकाशन संस्थान, वाराणसी।
14. शर्मा, एस. (2019): संज्ञानात्मक शैली और अध्ययन के तरीके, शिक्षा साहित्य प्रकाशन, जयपुर।
15. गुप्ता, पी. (2017): संज्ञानात्मक शैली और व्यक्तिगत भिन्नताएँ, शैक्षिक विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. वर्मा, के. (2020): शैक्षिक मनोविज्ञान और संज्ञानात्मक शैली, भारतीय शैक्षिक पुस्तकालय, मुंबई।
17. shodhganga.inflibnet.ac.in